अंक - 26

हस्ताक्षर

2024-25

एक कविता पैदल चलने के लिए

आशा न हो तो कौन चले पैदल
आशा के लिए

आशा न हो तो कौन नदी पार करे
आशा के लिए

आशा न हो तो कौन घुसे जलते घर में
आशा के लिए

→प्रभात

हस्ताक्षर

अंक - 26

संपादक मंडल

शालू
पल्लव कुमार पुष्प
यश कुमार
आर्यन प्रजापति
अक्षुण्ण पाठक
स्नेहा शाह
अभिनव कुमार झा
दिया किल्ला
अमित कुमार मीना

संपादक

पल्लव

हस्तलेखन सहयोग

शालू , स्नेहा शाह , पल्लव पुष्प , यश कुमार

आवरण पृष्ठ

दिया किल्ला

संपादकीय संपर्क

हिंदी विभाग , हिंदू महाविद्यालय , दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली - 07
ईमेल - hastakshar.2005@gmail.com

• प्रकाशित रचनाओं के विचार से हस्ताक्षर का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रम

पृष्ठ स.

- **चौखट** : पल्लव 1
- **जन्म शताब्दी** : (।) एक शताब्दी की कृष्णा सोबती 3
  – अभिनव कुमार सा
  (॥) एक शताब्दी के अमरकांत 9
  – शालू
- **साक्षात्कार** : 'शॉर्टकट नहीं चलेगा साहित्य में' 16
  (सुप्रसिद्ध साहित्यकार पंकज बिष्ट से बातचीत)
- **व्याख्यान** : 'आलोचनात्मकता और कुछ नयी पदावलियाँ' 27
  – सुधीश पचौरी
- **शिक्षक प्रसंग** : (।) बुद्धत्व का प्रकाश 56
  – अरुंधति
  (॥) कुछ तो बेचैनी 62
  – ज्ञान प्रकाश
  (॥।) मेरी धरती मेरा आसमान 68
  – रामेश्वर राय
- **यात्रा आख्यान** : 'एक जीवित देश' 78
  – रचना सिंह
- **फिल्म समीक्षा** : 'इनोसेंस' : दिल ना-उम्मीद तो नहीं! 82
  – अभिनव कुमार सा
- **रचना खण्ड** : (।) वसुधा – सौरव 85
  (॥) मदमाता यौवन – रोहित 87
  (॥।) विकासित हो रहे हैं हम...? – कैलाश सिंह 88
- **पांडुलिपि** : पार्वती तिर्की की चार कविताएँ 90

चौखट

समय गतिशील है। संसार हमेशा बदलता रहता है। कवि ने कहा था, दुनिया रोज बदलती है। दुनिया रोज बनती भी है, हम लोग ही अपनी-अपनी और समूची दुनिया को बनाते या विरूपित करते हैं। देखते देखते हमारे हिन्दू कॉलेज ने 125 वर्ष की गौरवपूर्ण यात्रा पूरी की और 126 वें वर्ष से एक नयी शुरुआत की। यह सौभाग्य की ही बात है कि हम सब इस यात्रा के दर्शक और सहयात्री हैं। आइए, अपनी भूमिका को और बेहतर बनाने का संकल्प लें।

हिन्दी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष पूरे होने के उत्सव भी मनाए जा रहे हैं। उदन्त मार्तण्ड जैसी प्रारम्भिक पत्रकारिता से यह यात्रा आज अंतरराष्ट्रीय सरहदों तक जारी है। दुनिया के अनेक देशों से भी हिन्दी के पत्र और पत्रिकाओं के प्रकाशन की सूचना मिलती है। हिन्दी साहित्य में भी पत्रिकाओं की खासी गतिशीलता है जो मासिक - सांस्थानिक पत्रिकाओं से लघु पत्रिकाओं तक व्याप्त है। हमारी पत्रिका 'हस्ताक्षर' ने भी शनैः शनैः एक लम्बी यात्रा तय की है।

यह अंक मुख्यतः हमारे विभाग के वरिष्ठ शिक्षक प्रो॰ रामेश्वर राय की सेवानिवृत्ति पर केन्द्रित